दीपावली व्रत

कार्तिक कृष्णा अमावस्या को समस्त भारत में दीपावली का त्यौहार बड़े ठाठ-वाट से मनाया जाता है। यह वैश्य जाति का महानतम त्यौहार है। इसलिये नाना प्रकार से घर और दुकानों को सजाकर रात्रि को रोशनी की जाती है और भगवती लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा के साथ-साथ बही बसनों का पूजन किया जाता है। इसी दिन भगवती लक्ष्मी जी समुद्र से प्रकट हुई थीं और इसी दिन राजा बलि को पाताल का राजा बनाकर वामन भगवान ने उसकी ड्योढ़ी पर रहना स्वीकार किया तथा इसी दिन रामचन्द्र जी ने रावण को जीतकर सीता और सेना सहित अयोध्या में प्रवेश किया था एवं इसी दिन राजा वीर विक्रमादित्य ने सिंहासन पर बैठकर नवीन संवत् की घोषणा की थी। अतः इन सब कारणों को लेकर इस दिन भारी उत्सव मनाया जाता है और श्री लक्ष्मी जी गणेश जी के सहित सब देवताओं का पूजन करते हुए सुख सम्पत्ति की भगवान से याचना की जाती है।

श्री महालक्ष्मी जी पूजन सामग्री एवं विधि

पूजन सामग्री- पान, इत्र, दूध, धूप, कर्पूर, दियासलाई, नारियल, सुपारी, रोली, घी, लालवसा, मेवा, गंगाजल, फल, लक्ष्मी-प्रतिमा, कलावा, रुई, सिंदूर, शहद, गणेश-प्रतिमा, फूल, दूब, दही, दीप, जल-पात्र, मिठाई, तुलसी।

विधि- एक थाल में या भूमि शुद्ध करके नवग्रह बनाए। रुपया, सोना, चांदी, श्री लक्ष्मी जी, श्री गणेश जी व सरस्वती जी, श्री महेश आदि देवी-देवता को स्थान दें। यदि कोई धातु की मूर्ति हो तो उसको साक्षात रूप

मान कर पहले दूध, फिर दही से, फिर गंगाजल से स्नान कराके वस्त्र से साफ करके स्थान दें और स्नान करायें। दूध, दही व गंगाजल में चीनी बताशे डालकर पूजन के बाद सबको उसका चरणामृत दें। घी का दीपक जलाकर पूजन आरम्भ करें।

श्री लक्ष्मी जी कहानी

एक साहूकार के बेटी थी। वह हर रोज पीपल सींचने जाती थी। पीपल में से लक्ष्मी जी निकलती और चली जातीं। एक दिन लक्ष्मी जी ने साहूकार की बेटी से कहा कि तू मेरी सहेली बन जा। तब लड़की ने कहा मैं अपने पिता जी से पूछकर कल आऊंगी। घर जाकर पिताजी को सारी बात कह दी तो पिताजी बोले- वह तो लक्ष्मी जी हैं। अपने को क्या चाहिए, बन जा। दूसरे दिन लड़की फिर गई। जब लक्ष्मी जी निकल कर आई और कहा सहेली बन जा तो लड़की ने कहा बन जाऊंगी और दोनों सहेली बन गई। लक्ष्मी जी ने उसको खाने का न्योता दे दिया। घर आकर लड़की ने अपने बाप से कहा कि मेरी सहेली ने मुझे खाने को न्योता दिया है। तब बाप ने कहा कि सहेली के जीमने जाइयो पर जरा संभाल कर जाइयो। जब वह लक्ष्मी जी के याहं जीमने गई तो लक्ष्मी जी ने उसे शाल दुशाला ओढ़ने के लिए दिया, रुपये परखने के लिए दिये, सोने की चौकी, सोने की थाली में छत्तीस प्रकार का भोजन करा दिया। जीम कर जब वह जाने लगी तो लक्ष्मी जी ने पल्ला पकड़ लिया और कहा कि मैं तो तेरे घर जीमने जाऊंगी। तो उसने कहा आ जाइयो। घर जाकर चुपचाप बैठ गई। तब बाप ने पूछा कि बेटी सहेली के यहां जीम कर आई है और उदास क्यों बैठी है? तो उसने कहा पिताजी मेरे को लक्ष्मी जी ने इतना दिया, अनेक प्रकार के भोजन कराए परन्तु मैं कैसे जिमाऊंगी? अपने घर में तो कुछ भी नहीं है। फिर बाप ने कहा कि जैसा होगा जिमा देंगे परन्तु तू गोबर मिट्टी से चौका देकर सफाई कर ले। चार मुख वाला दीया

जलाकर लक्ष्मी जी का नाम लेकर रसोई में बैठ जाइयो। लड़की सफाई करके लड्डू लेकर बैठ गई। उसी समय एक रानी नहा रही थी। उसका नौलखा हार चील उठा कर ले आई और उसका लड्डू ले गई और वह नौलखा हार डाल गई। बाद में वह हार को तोड़कर बाजार में गई और सामान लाने लगी तो सुनार ने पूछा कि क्या चाहिए। तब उसने कहा कि सोने की चौकी, सोने का थाल, शाल, दुशाला दे दें, मोहर दें और सारी सामग्री दें। छत्तीस प्रकार का भोजन हो जाए, इतना सामान दें। सारी चीजें लाकर बहुत तैयारी करी और रसोई बनाई तब गणेश जी से कहा कि लक्ष्मी जी को बुलाओ। तो आगे-आगे गणेश जी और पीछे लक्ष्मी जी आई। उसने फिर चौकी डाल दी और कहा सहेली चौकी पर बैठ जा। जब लक्ष्मी जी ने कहा सहेली चौकी पर तो राजा रानी भी नहीं बैठे, कोई भी नहीं बैठा तो उसने कहा कि मेरे यहां तो बैठना पड़ेगा, मेरे मां-बाप, भाई-भतीजे, मेरे पोते-बहुएं क्या सोचेंगी, पड़ोसन क्या सोचगी? लक्ष्मी जी की सहेली बपनी थी, अट्ठाईस पीड़ियों तक यही पर रहना पड़ेगा। फिर लक्ष्मी जी चौकी पर बैठ गई। तब उसने बहुत खातिर की, जैसे लक्ष्मी जी ने की वैसे ही उसने करी। लक्ष्मी जी उस पर खुश हो गई और घर में खूब धन लक्ष्मी हो गई। साहूकार की बेटी ने कहा कि मैं अभी आ रही हूँ। तुम यहीं बैठी रहना और वह चली गई। लक्ष्मी जी गई नहीं और चौकी पर बैठी रही। उसको बहुत धन-दौलत दिया। हे लक्ष्मी माता! जैसा तुमने साहूकार की बेटी को दिया वैसा सबको देना। कहते सुनते हुंकारा भरते अपने सारे परिवार को दियो, पीहर में देना, सुसराल में देना। बेटे, पोते को देना। हे लक्ष्मी माता! सबका दुख दूर करना, दरिद्रता दूर करना और सबकी मनोकामना पूर्ण करना। दीवाली के दूसरे दिन सब लोग धोंक खाओ। सारी औरतें अपनी सासुजी और नन्द को पैर छूकर रुपये देती जायें और साथ में लड्डू दें।

अन्नकूट : गोवर्धन पूजा

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ गोबर की मूर्ति बनाकर भगवान की पूजा करती हैं। संध्या समय अन्नादिक का भोग लगाकर दीपदान करती हुई परिक्रमा करती हैं। तत्पश्चात् उस पर गऊ का बास (वाधा) कुदाकर उसके उपले थापती हैं और बाकी को खेत आदि में गिरा देती हैं। इसी दिन नवीन अन्न का भोजन बनाकर भगवान को भोग भी लगाया जाता है जिसे अन्नकूट कहते हैं।

कथा- प्राचीन काल में दीपावली के दूसरे दिन ब्रजमण्डल में इन्द्र की पूजा हुआ करती थी। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- ''कार्तिक में इन्द्र की पूजा का कोई लाभ नहीं, इसलिए हमें गो-वंश की उन्नति के लिए पर्वत व वृक्षों की पूजा कर उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। पर्वतों और भूमि पर घास-पौधे लगाकर वन महोत्सव भी मनाना चाहिए। गोबर की ईश्वर के रूप में पूजा करते हुए उसे जलाना नहीं चाहिए, बल्कि खेतों में डालकर उस पर हल चलाते हुए अन्नोषधि उत्पन्न करनी चाहिए जिससे हमारे देश की उन्नति हो।''

भगवान श्रीकृष्ण का यह उपदेश सुनकर ब्रजवासियों ने ज्यों ही पर्वत, वन और गोबर की पूजा आरम्भ की, इन्द्र ने कुपित होकर सात दिन तक घनघोर वर्षा शुरू कर दी। परन्तु श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उंगली पर उठाकर ब्रज को बचा लिया। फलतः इन्द्र को लज्जित होकर सातवें दिन क्षमा-याचना

करनी पड़ी। तभी से समस्त उत्तर भारत में गोवर्धन पूजा प्रचलित हुई। गोवर्धन पूजा करने से खेतों में अधिक अन्न उपजता है, रोग दूर होते हैं और घर में सुख-शान्ति रहती है।

भ्रातृ द्वितीया : भैया दूज

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भैया दूज का पर्व मनाया जाता है। यों तो सारे भारत में इस पर्व की धूम रहती है, परन्तु महाराष्ट्र में माऊ बीज, गुजरात में भाई बीज, बंगाल में भाई फोटा व उत्तर प्रदेश में भ्रातृ द्वितीया के रूप में यह विशेष लोकप्रिय है। लोग इसे यम द्वितीया भी कहते हैं। यह सुखद अनुभूति का पर्व है। इस दिन जो भाई अपनी बहन के घर जाकर उसके हाथ का बना खाना ग्रहण करता है, वह धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है।

कथा- सूर्य के पुत्र-पुत्री यम और यमी में बहुत प्रेम था परन्तु बाद में राज्यकार्य के कारण यम अपनी बहन यमी अर्थात् यमुनाजी को भुल गए। तब एक दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया को बहन ने भाई को निमन्त्रण भेजा। यम उद्विग्न हो उठे, उन्हें बहन के टीके की याद आई। वे यमुना के घर पहुंचे, बहन बहुत प्रसन्न हुई। उसने भाई का टीका किया। टीके के बाद यम ने कुछ मांगने को कहा। बहन ने मांगा कि आज के दिन जो बहनें भाई का टीका करें, उनकी रक्षा होनी चाहिए।

भविष्योत्तर पुराण में इस कथा के अन्त में कहा गया है- ''हे युधिष्ठिर! यमुना ने कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को ही अपने भाई को निमन्त्रित किया था।'' अतः इस पर्व का नाम यम द्वितीया पड़ गया। इस दिन बहन के स्नेहपूर्ण हाथों से परोसा भोजन ग्रहण करना चाहिए।

आरती श्री गणेश जी की

सदा भवानी दाहिनी गौरी पुत्र गणेश।
पांच देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश॥ टेक॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥ जय गणेश...

एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी॥ जय गणेश..

अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बाझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय गणेश.

पान चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे सन्त करे सेवा॥ जय गणेश.

दीनन की लाज राखो शम्भु-सुत वारी।
कामना को पूरा करो जाएं बलिहारी॥ जय गणेश.

आरती श्री अहोई माता की

जय होई माता जय होई माता।
तुमको निशदिन सेवत हर विष्णु विधाता॥ जय०
ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला तू ही है जगमाता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥ जय०
माता रूप निरन्जन सुख-सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत नित मंगल आता॥ जय०
तू ही है पाताल बसन्ती तू ही है शुभदाता।
प्रभाव कर्म प्रकाशक जगनिधि से त्राता॥ जय०
जिस घर थारो वासा वाहि में गुण आता।
कर न सके सोई कर ले मन नहीं धड़काता॥ जय०
तुम बिन सुख न होवे पुत्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव तुम बिन नस जाता॥ जय०
शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीर निधि जाता।
रतन चतुर्दश तोकू कोई नहीं पाता॥ जय०
श्री होई माँ की आरती जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता॥ जय०

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदित सेवत, हर विष्णु धाता॥ ॐ...
ब्रह्माणी रूद्राणी कमला, तु ही है जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ...
दुर्गा रूप निरंजनि सुख संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि पाता॥ ॐ...
तू ही है पाताल बसतीं तू ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ ॐ...
जिस घर तेरा बासा, जाहि में गुण आता।
कर न सके सो करले, असीमित धन पाता॥ ॐ...
तुम बिन यज्ञ नहीं होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता॥ ॐ...
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ॐ...
महालक्ष्मी जी की आरती जो कोई जन गाता।
उर में आनंद समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ...

आरती श्री जगदीश जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे॥
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे॥ ॐ जय..
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसै मन का॥ प्रभु...
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का॥ ॐ जय..
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी॥ प्रभु...
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ ॐ जय..
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥ ॐ जय..
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता॥ प्रभु...
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय..
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति॥ प्रभु...
किस बिधि मिलूं दयामय! मैं तुमको कुमति॥ ॐ जय..
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु...
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय..
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु...
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ जय..